अग्र भारत

नई सोच का अखबार

www.agrabharat.in

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

वर्षः 19 | अंकः 55 | आगरा, बुधवार 05 अगस्त 2026 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2.00 रू.

30 से ज्यादा आतंकियों को अज्ञात हमलावरों ने किया ढेर, लश्कर कमांडर ने खुद कबूला

आतंक के आकाओं में भरा खौफ

नई दिल्ली। आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के वरिष्ठ कमांडर रिजवान हनीफ के एक वीडियो में दावा किया गया है कि पिछले कुछ वर्षों में संगठन के 30 से अधिक आतंकियों की लक्षित हत्याएं हुई हैं। उसने इन घटनाओं के लिए भारतीय खुफिया एजेंसियों को जिम्मेदार ठहराया, लेकिन अपने आरोपों के समर्थन में कोई सबूत नहीं दिया। भारत सरकार पहले भी ऐसे आरोपों को निराधार बता चुकी है।

पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े एक वरिष्ठ आतंकी ने दावा किया है कि पिछले तीन से चार वर्षों में 30 से ज्यादा लश्कर आतंकियों की धुरंधर स्टाइल में हत्या की गई। लश्कर के आतंकी रिजवान हनीफ ने इन हत्याओं के पीछे भारतीय खुफिया एजेंसियों का हाथ होने का फर्जी दावा किया।

उसने अपने दावों के समर्थन में कोई सबूत पेश नहीं किया। भारत सरकार पहले भी ऐसे आरोपों को खारिज कर चुकी है।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में लश्कर-ए-तैयबा का उप प्रमुख और वरिष्ठ कमांडर रिजवान हनीफ यह दावा करता दिख रहा है कि भारतीय खुफिया एजेंसियों ने 'अज्ञात हमलावरों' की मदद से लश्कर के कई आतंकियों की हत्या कराई। हनीफ के मुताबिक, ये घटनाएं कराची, पेशावर, रावलपिंडी और पीओके के मुजफ्फराबाद तथा रावलाकोट में हुई। आतंकी भर्ती और सीमा पार घुसपैठ में भूमिका के लिए कुख्यात रिजवान हनीफ वीडियो में हनीफ हिंदू धर्म के खिलाफ आपत्तिजनक और घृणा फैलाने वाली भाषा का इस्तेमाल करता भी सुनाई देता है।

पाकिस्तान में अज्ञात हमलावरों द्वारा मारे गए प्रमुख लश्कर आतंकियों में अबू सैफुल्लाह उर्फ रजाउल्लाह निजामानी का नाम भी शामिल है। वह वर्ष 2006 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) मुख्यालय पर हुए हमले का आरोपी था। उसकी सिंध में अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

भारत ने पहले भी खारिज किए हैं ऐसे आरोप

यह दावा ऐसे समय सामने आया है, जब पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा में विरोध प्रदर्शन जारी हैं। हनीफ ने अपने आरोपों के समर्थन में कोई सबूत नहीं दिया है।

भारत सरकार पहले भी ऐसे आरोपों को खारिज करती रही है।

जर्जर सड़क की वजह से लोग परेशान

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो वेस्ट स्थित रोजा जलालपुर के पास बनी सड़क लंबे समय से जर्जर हालत में है। बारिश के दौरान सड़क पर पानी भर जाने से लोगों का निकलना मुश्किल हो गया है।

सड़क रॉयल रेजीडेंसी, साई वन सोसाइटी और वीआईपी होम्स के लिए मुख्य मार्ग तक जाने का रास्ता है। रोजाना बड़ी संख्या में लोग इसी रास्ते से आते जाते हैं। स्थानीय निवासी दीपक मौर्य ने बताया कि सड़क पर कई गड्ढे हैं। हल्की बारिश में भी पानी जमा हो जाता है, जिससे सड़क पर हर जगह कीचड़ हो गया है और सबसे अधिक परेशानी पैदल चलने वालों को होती हैं। कीचड़ के कारण गड्ढे दिखाई नहीं देते और दोपहिया वाहन चालकों के फिसलने का खतरा बना रहता है।

स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि सड़क की जल्द से जल्द मरम्मत कराई जाए और जल निकासी की उचित व्यवस्था की जाए, जिससे बारिश के दौरान पानी जमा नहीं हो और लोगों को सुरक्षित एवं अच्छा आवागमन मिल सके।

चीन में हर विदेशी पर रहती है खुफिया नजर

चीन। कोई विदेशी नागरिक, पर्यटक या व्यवसायी जैसे ही चीन की धरती पर कदम रखता है, उसकी हर छोटी-बड़ी हरकत पर खुफिया नजरें टिक जाती हैं। वीजा रिकार्ड से लेकर उसके होटल में ठहरने, कहीं आने-जाने, खाने-पीने तक की रीयल टाइम मॉनीटरिंग होती है और बाकायदा डिजिटल प्रोफाइल तैयार कर लिया जाता है। चीनी प्रशासन अपनी व्यापक निगरानी प्रणालियों को आतंकवाद और अपराध रोकने का जरिया बताता है, लेकिन इसे सुरक्षा के नाम पर व्यक्तिगत गोपनीयता का खुला उल्लंघन माना जा रहा है। यह सब चीनी पुलिस और निगरानी तकनीकी कंपनियों के संगठित तंत्र के तहत चल रहा है। कंपनियां पुलिस की जरूरतों के मुताबिक रोबोटिक्स, फेशियल रिकग्निशन और डायनेमिक कंट्रोल प्लेटफॉर्म जैसे उन्नत सर्विलांस सिस्टम तैयार करती हैं। ह्यूमन राइट्स वॉच की एशिया उप-निदेशक माया वांग का कहना है, अन्य देश भी निगरानी प्रणालियों का उपयोग करते हैं, लेकिन चीन में पुलिस की मनमानी के खिलाफ बहुत कम सुरक्षा उपाय मौजूद हैं। कनाडा की एक शोध फर्म सेकदेव ग्रुप से जुड़े वाल्टन ने कहा कि प्रत्येक नया प्लेटफॉर्म उन स्थानों की संख्या को बढ़ाता है। जहां संवेदनशील व्यक्तिगत डाटा को गलत तरीके से कॉपी किया जा सकता है या बाहरी रूप से खोजा जा सकता है। चीन में खुफिया निगरानी का खुलासा असुरक्षित पुलिस डैशबोर्ड का डाटा लीक होने से हुआ। दरअसल, एम्सटर्डम के एक साइबर सुरक्षा शोधकर्ता और पत्रकार मार्क होफर एक दिन इंटरनेट पर कुछ खंगाल रहे थे, जब उनकी नजर ओवरसीज पर्सनल के लिए डायनेमिक कंट्रोल प्लेटफॉर्म पर पड़ी।

यात्री वैन और ट्रक की टक्कर 14 लोगों की मौत

चालक की लापरवाही पड़ी भारी

पूर्वी अफ्रीकी। युगांडा में एक यात्री वैन और रेत ले जा रहे ट्रक के बीच टक्कर हो गई। इसमें कम से कम 14 लोगों की मौत हो गई। यह जानकारी पुलिस ने दी। यह हादसा सोमवार रात कालुंगु जिले के कमुंगा ट्रेडिंग सेंटर इलाके में एक राजमार्ग पर हुआ। पुलिस ने एक बयान में कहा कि मरने वाले सभी लोग वैन में सवार यात्री थे। वहीं, चार अन्य घायल हो गए। पूर्वी अफ्रीकी देश के अधिकारियों ने कहा कि वे ट्रक चालक की तलाश कर रहे हैं, जो घटनास्थल से फरार हो गया था।

अफ्रीका में सड़क हादसा एक समस्या है

अफ्रीका भर में सड़क दुर्घटनाएं एक समस्या हैं और युगांडा में ये आम हैं। इन दुर्घटनाओं के लिए अक्सर खराब रखरखाव वाले वाहन, अत्यधिक गति और खराब सड़क स्थितियों को जिम्मेदार ठहराया जाता है। जुलाई में पूर्वी युगांडा में एक सुरम्य झरने की शैक्षिक यात्रा से लौट रही एक प्राथमिक विद्यालय की बस सड़क से उतरकर पलट गई, जिससे कम से कम 20 बच्चों और एक वयस्क की मौत हो गई।

दुनिया के तीसरे सबसे छोटे देश ने बदला अपना नाम

अजय भारत न्यूज

प्रशांत महासागर। में बसे दुनिया के तीसरे सबसे छोटे देश नौरू ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अपना नाम बदल दिया है। अब यह देश आधिकारिक तौर पर 'रिपब्लिक ऑफ नाओएरो' कहलाएगा। संयुक्त राष्ट्र (ह) ने भी अपने रिकॉर्ड में नया नाम लागू कर दिया है। करीब 12 हजार आबादी वाले इस द्वीपीय देश का कहना है कि 'नाओएरो' उसका असली नाम है, जबकि 'नौरू' विदेशी लोगों की सुविधा के लिए प्रचलन में आया था। अब सरकार का मानना है कि समय आ गया है कि देश दुनिया के सामने अपनी मूल पहचान के साथ जाना जाए। नाओएरो इक्कीसवीं सदी में ऐसा आठवां देश बन गया है जिसने अपना नाम बदला है। इससे पहले तुर्किये ने 2022 में ऐसा किया था।

शादी में विवाद के बाद 10 साल तक गृहयुद्ध चला

19वीं सदी के आखिर तक नाउरू एक छोटा-सा द्वीप था, जहां 12 स्थानीय जनजातियां रहती थीं। यहां कोई आधुनिक सरकार या सेना नहीं थी। लोगों का जीवन मछली पकड़ने, नारियल की खेती और समुद्र से मिलने वाले संसाधनों पर निर्भर था। 1870 के दशक में यूरोपीय व्यापारी नाउरू पहुंचने लगे। वे यहां नारियल और दूसरे सामान का व्यापार करते थे। बदले में उन्होंने स्थानीय लोगों को शराब और बंदूकें बेचना शुरू कर दिया। इससे द्वीप का सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगा।

1878 में एक शादी समारोह के दौरान रीति-रिवाज को लेकर बहस हुई। बहस के बीच एक व्यक्ति ने पिस्तौल निकालकर गोली चला दी, जिससे एक कबीलाई प्रमुख के बेटे की मौत हो गई।

नाउरू की पारंपरिक संस्कृति में ऐसी हत्या का बदला लेना सामाजिक जिम्मेदारी माना जाता था।

यहीं से बदले का सिलसिला शुरू हुआ, जो धीरे-धीरे पूरे द्वीप के 12 कबीलों के बीच गृहयुद्ध में बदल गया। यह संघर्ष करीब 10 साल तक चला, जिसे नाउरू सिविल वॉर के नाम से जाना जाता है। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग मारे गए, कई गांव उजड़ गए और लगभग हर परिवार किसी न किसी रूप में इस हिंसा से प्रभावित हुआ। हालात इतने खराब हो गए कि आखिरकार 1888 में जर्मनी ने हस्तक्षेप कर द्वीप पर नियंत्रण स्थापित किया, हथियार जब्त किए और इस लंबे खूनी संघर्ष को समाप्त कराया।

जर्मनी के बाद ऑस्ट्रेलिया ने नौरू पर कब्जा किया

1914 में प्रथम विश्व युद्ध शुरू होते ही हालात बदल गए। ऑस्ट्रेलियाई सेना ने बिना ज्यादा प्रतिरोध के नाओएरो पर कब्जा कर लिया। युद्ध खत्म होने के बाद जर्मनी हार गया और उसे अपने कई विदेशी उपनिवेश छोड़ने पड़े।करीब पांच दशक तक विदेशी सरकार के कब्जे में रहने के बाद नाओएरो को 31 जनवरी 1968 को पूर्ण स्वतंत्रता मिली और यह एक संप्रभु गणराज्य बन गया।

पुराना नाम		नया नाम
नौरू		नाओएरो
क्षेत्रफल	आबादी	राजधानी
21.5 वर्ग किमी	करीब 12 हजार	कोई नहीं
भाषा	आजादी	मुद्रा
नाउरुआन और अंग्रेजी	31 जनवरी 1968	ऑस्ट्रेलियाई डॉलर

फूंक-फूंक कर नहीं चले तो खतरे में तेजस्वी यादव

अजय भारत न्यूज

बिहार। पिता लालू प्रसाद यादव से राष्ट्रीय जनता दल की कमान ले चुके हैं तेजस्वी यादव। राजद के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। जहां उनके पिता बहुमत वाली सरकार चलाते थे, उसी बिहार में महज दो विधायक घट जाएं तो तेजस्वी यादव के पीछे से विपक्ष के नेता की कुर्सी खिंच जाएगी। लालू केंद्र के लिए 'किंग मेकर' कहलाते थे और तेजस्वी पटना की बांकीपुर सीट पर अपने प्रत्याशी की जमानत तक नहीं बचा पा रहे। उस पर लगातार दुश्मन पाले जा रहे। बाहरी तो बाहरी, घर में भी। इतना होने के बावजूद विपक्ष के नेता की प्राथमिक जिम्मेदारी से बार-बार पीछे हट रहे। लेकिन, अब मामला बॉर्डर पर है। और, बॉर्डर पर सामने हैं नए-नवेले विधायक प्रशांत किशोर। प्रशांत कुर्सी तो नहीं खींचेंगे, लेकिन कद तो एक गलती पर घटा देंगे- यह तय है।

तेज प्रताप को बाहर कराया, रोहिणी रोती हुई निकली थीं

पिछले दिनों जब AISA के आंदोलन के दौरान तेज प्रताप यादव गिरफ्तार हुए तो बातों-बातों में तेजस्वी यादव ने भ्रातृ-प्रेम दिखाने की कोशिश की, लेकिन इससे बड़े भाई पिघले नहीं। तेज प्रताप यादव को लालू परिवार और राष्ट्रीय जनता दल से बाहर भले सीधे-सीधे तेजस्वी ने नहीं किया, लेकिन आरोपी वही हैं इस कार्रवाई के। उसी तरह, बिहार विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद जब लालू को किडनी देने वाली बेटी रोहिणी आचार्य रोती हुई घर से निकलीं तो भी आरोप के दायरे में तेजस्वी ही थे। तेज प्रताप यादव ने प्रशांत किशोर से दो महीने पहले मुलाकात की। फिर बांकीपुर में प्रत्याशी दिया, लेकिन उस उम्मीदवार के नामांकन रद्द होते ही खुलकर प्रशांत किशोर के समर्थन में आ गए।

जयपुर के त्रिपोलिया गेट को मिला शाही रूप

नई दिल्ली। जयपुर की पहचान और राजसी विरासत के प्रतीक करीब 300 साल पुराने त्रिपोलिया गेट को नए शाही अंदाज में सजाया गया है। इस ऐतिहासिक प्रवेश द्वार पर पारंपरिक राजस्थानी शैली की नई चित्रकारी की गई है। चित्रकारी के लिए सिटी पैलेस के प्रसिद्ध उदयपोल की थीम को आधार बनाया गया है, जिससे त्रिपोलिया गेट अब पहले से कहीं अधिक आकर्षक और भव्य दिखाई दे रहा है। इसके रिनोवेशन का कार्य जयपुर के पूर्व राजपरिवार के सदस्य सवाई पद्मनाभ सिंह के निर्देशन पर किया गया है। यह दरवाजा पिछले कई महीनों से बंद था। राजस्थान पर्यटन विभाग की ओर से अब जल्द ही इसकी विधिवत शुरुआत की जाएगी। 15 और 16 अगस्त को यहां से तीज की शाही सवारी निकलेगी रिनोवेशन के दौरान गेट की मूल स्थापत्य शैली और ऐतिहासिक स्वरूप को पूरी तरह सुरक्षित रखते हुए पारंपरिक रंगों और तकनीकों का उपयोग किया गया। वर्षों पुरानी दीवारों की बनावट को ध्यान में रखते हुए कलाकारों ने इस पर हाथ से चित्रकारी की है।

गैस ग्राहकों के लिए जरूरी सूचना, 15 अगस्त तक करा लें ये काम, वरना बंद हो जाएगा कनेक्शन- जानें अपनी स्थिति

घरेलू एलपीजी ग्राहकों के लिए जरूरी खबर है। 15 अगस्त तक ई-केवाईसी करा लें, वरना गैस कनेक्शन बंद हो जाएगा। गाजियाबाद जिले के 12 लाख उपभोक्ताओं में करीब दो लाख का सत्यापन बाकी है। ऑनलाइन या एजेंसी जाकर प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं।

गाजियाबाद। घरेलू एलपीजी उपभोक्ताओं के लिए जरूरी सूचना है। जिन उपभोक्ताओं ने अब तक अपने गैस कनेक्शन की ई-केवाईसी नहीं कराई है, उन्हें 15 अगस्त तक यह प्रक्रिया पूरी करनी होगी। इस समय सीमा के भीतर ई-केवाईसी नहीं कराने पर गैस कनेक्शन बंद कर दिया जाएगा।

गाजियाबाद के जिला पूर्ति अधिकारी अमित तिवारी ने बताया कि जिले में करीब 12 लाख घरेलू एलपीजी उपभोक्ता हैं। इनमें से लगभग 10 लाख उपभोक्ताओं की ई-केवाईसी पूरी हो चुकी है, जबकि करीब दो लाख की ई-केवाईसी अभी बाकी है। गैस एजेंसियां ऐसे उपभोक्ताओं से लगातार संपर्क कर रही हैं। उनको मोबाइल फोन पर संदेश भेजकर प्रक्रिया पूरी करने की अपील कर रही हैं। विशेष शिविर भी लगाए जा रहे हैं, ताकि तय समय सीमा से पहले सभी की ई-केवाईसी पूरी हो सके।गैस एजेंसी संचालकों के अनुसार अभियान का उद्देश्य उपभोक्ताओं की सही पहचान सुनिश्चित करना, निष्क्रिय कनेक्शनों का सत्यापन करना और पुराने रिकॉर्ड को अपडेट करना है।

कई उपभोक्ताओं के बदल गए पते और मोबाइल नंबर

कई उपभोक्ताओं के पते और मोबाइल नंबर बदल चुके हैं, जबकि कुछ कनेक्शनों पर लंबे समय से सिलिंडर नहीं लिया गया है। ऐसे सभी कनेक्शनों का सत्यापन किया जा रहा है।

इस तरह पूरी करें प्रक्रिया

जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया कि उपभोक्ता अपनी गैस एजेंसी, कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) और विशेष शिविरों में बायोमेट्रिक सत्यापन के माध्यम से ई-केवाईसी करा सकते हैं। कई गैस कंपनियों ने अपने मोबाइल एप और अधिकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी यह सुविधा उपलब्ध कराई है। इसके अलावा घर-घर सिलिंडर पहुंचाने वाले डिलीवरी बॉय के माध्यम से भी ई-केवाईसी कराई जा सकती है।

टीएमसी के बागी सांसदों में फिर दरार! एनडीए बैठक से लगातार दूसरी बार 3 मुस्लिम सांसद दूर, वापसी की अटकलें तेज

नई दिल्ली । तृणमूल कांग्रेस से बगावत कर अलग गुट बनाने वाले 20 सांसदों को लेकर सियासी हलचल लगातार बढ़ रही है। मंगलवार को लगातार दूसरी बार इन सांसदों की एनडीए बैठक में संख्या 17 ही रही। तीन मुस्लिम सांसद अबु ताहिर खान, खलीलुर रहमान और युसुफ पठान इस बैठक में शामिल नहीं हुए। तीनों सांसद इससे पहले भी एनडीए की बैठक से दूरी बना चुके हैं।

इस बीच टीएमसी के वरिष्ठ नेता सौगत रॉय के एक बयान ने पूरे घटनाक्रम को और दिलचस्प बना दिया है। उन्होंने दावा किया कि बागी सांसदों में से कुछ उनके संपर्क में हैं और पार्टी में वापस आने का रास्ता तलाश रहे हैं। हालांकि, अभी यह स्पष्ट नहीं है कि कितने सांसद टीएमसी में लौटना चाहते हैं।

दरअसल, टीएमसी से अलग होकर एनसीपीआई में शामिल हुए इन 20 सांसदों के विलय को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने अभी तक औपचारिक मंजूरी नहीं दी है। लोकसभा की वेबसाइट पर भी इन सांसदों को अभी टीएमसी सांसद के रूप में दर्ज किया गया है। टीएमसी नेता अभिषेक बनर्जी पहले ही सभी 20 सांसदों को अयोग्य ठहराने के लिए लोकसभा अध्यक्ष के समक्ष याचिकाएं दे चुके हैं।

वहीं, पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने दिल्ली के बंग भवन में सभी 20 सांसदों के लिए दोपहर के भोजन का आयोजन किया। खास बात यह रही कि एनडीए बैठक से दूर रहने वाले तीनों मुस्लिम सांसद भी इस भोज में शामिल हुए। बैठक में केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव और भाजपा सांसद निशिकांत दुबे भी मौजूद थे। एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने दावा किया कि तीनों सांसद एनडीए के साथ हैं और बैठक से उनकी दूरी रणनीतिक फैसला है। शुभेंदु अधिकारी ने बाद में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से भी मुलाकात की। ऐसे में अब इन 20 सांसदों की वास्तविक राजनीतिक स्थिति पर जल्द तस्वीर साफ होने की उम्मीद है।